प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ१९६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख
का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ अंक- २२५ भोपाल १७ मार्च, डाक १८ मार्च २०२६ भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित पृष्ठ -८ मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

मेरे शब्दों में भरा मेरा ही खुमार। तोड़ते हैं सन्नाटा भरते हैं प्यार।।

त्वरित विचार
अग्र लेख-३७

कैलाश आदमी

शब्द, पंचतत्वों में से एक आकाश का प्रतीक है, जो नाद तथा स्वर के रूप में प्रतिध्वनित होता है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए निसर्ग प्रदत्त अमूल्य धन है जो वाणी द्वारा प्रकट होता है। शब्दों से ही वाक्य रचना होती है। वाक्य है, जो अवचेतन के लिये प्रेरणा है, आत्मजागृति स्त्रोत भी।

शब्द जब पुष्प बनकर वाणी से झरता है, तो प्रेमाभिव्यक्ति हो जाती है, किन्तु जब वह शूल का रूप लेता है, तो न केवल सामने वाले व्यक्ति को चुभता है बल्कि आत्मा को भी वेध जाता है।

आदिकाल से प्रत्येक युग में, समय ने केवल शब्दों को ही परखने का कार्य किया। जो कभी वरदान, कभी शाप तो कभी समूल विनाश के रूप में सामने आते रहे हैं। महाभारत युद्ध और वर्तमान में चल रहा अमेरिका-इजराइल-ईरान युद्ध विनाश के ही सूचक कहे जा सकते हैं।

मधुर शब्द जहाँ किसी के हृदय को शीतल कर, आत्मविभोर कर देता है, वहीं कटु, कड़वा, हास्य, तथा व्यंगात्मक शब्द रक्त-सम्बन्धों को भी समाप्त कर देता है।

हिन्दू धर्म का सनातन शब्द अकार' (ओम) है, जिसमें सृष्टि का वास बताया जाता है तथा धर्म कोई भी हो संसार का सनातन शब्द 'माँ' है, जो जन्मदात्री है। गत दिवस मातृ शक्ति के सम्मान में आयोजित सभा में जब मुझे अध्यक्षीय संबोधन हेतु कहा गया तो मैने कहा कि अमेरिका-इजराइल-ईरान युद्ध नहीं होता यदि इन देशों के प्रमुखों में महिलाओं को स्थान मिला होता क्योकि माँ को दया व करूणा का सागर कहा गया है।

जीवमात्र के मुख से उच्चारित हुआ प्रत्येक शब्द निसर्गनाद है, जिसमें असीम शक्ति समाहित है। इन शब्दों में ओम और माँ को शीर्षस्थ स्थान प्राप्त है।

शब्द का प्रकार एक ही है, किन्तु उसमें विद्यमान अर्थ भिन्न-भिन्न प्रकार के हो सकते हैं। शब्द की महत्ता भुक्तभोगी अथवा रसिक ही समझ सकते हैं क्योंकि मुख से निकला प्रत्येक शब्द मनुष्य के बुद्धि-विवेक तथा चरित्र का मूक परिचायक होता है।

व्यक्तिगत जीवन में वाणी से व्यवहार का सहज ही पता लग जाता है। व्यवहारिक तुला क्षण भर में ही व्यक्ति के वैयक्तिक स्तर का प्रमाण दे देती है। उसका धैर्य तथा सहनशीलता भी इसी से परिभाषित हो जाता है। इस हेतु किसी वक्तव्य की आवश्यकता नहीं है।

शब्द ही मनुष्य के मित्र हैं तथा शत्रु भी, जो आजीवन साथ रहते हैं, तथा मित्रता तथा शत्रुता के भी कारण बन जाते हैं। मधुर शब्दों में वह सामर्थ्य है कि कोई अपरिचित भी क्षणमात्र में मित्र बन जाता है, वहीं कटुता भरे शब्द प्रगाढ़ मित्र ही नहीं, रक्त-सम्बन्धों में भी शत्रुता का विष वमन कर डालते हैं। तदुपरान्त हाथ मलने के अतिरिक्त कुछ नहीं बचता।

मनुष्य के मन-बुद्धि ही शब्दों में सुकोमलता भरने के लिये पर्याप्त हैं। इस विषय के प्रति मनुष्य को प्रतिदिन ही नहीं, प्रति पल गम्भीरता से चिंतन मनन तथा आत्मनिरीक्षण करते रहना आवश्यक है। मुख या मुख निसृत वाणी से निकला हुआ प्रत्येक शब्द पराया हो जाता है, जिसका न लौटना सम्भव है, न ही सुधार। हमारे ही कहे शब्द हमारे शत्रु बन बैठते हैं, जिन्हें मिटाने के लिये पछतावा भी कम पड़ जाता है। अतएव, बोलने के पूर्व व्यक्ति को सावधानी बरतना चाहिए। इस हेतु जागरूकता अति आवश्यक है।

'कागा का कौ धन हरै, कोयल का को देय, मीठी बोली बोलि कै जग बस में करि लेय' यह काव्य पंक्ति बहुत प्रचलित है। इसका अर्थ है न तो काग (कौआ) किसी का धन लूटता है, और न ही कोयल किसी को कुछ देती है। यदि अन्तर है तो केवल शब्द का है, कि एक स्वर हमारे चित्त को विचलित (खिन्न) करता है, तथा दूसरा मन में मिठास घोल देता है। अन्य क्रियाओं की भाँति हमें शब्दों की स्वनीति बनाना और उसे परखते रहना चाहिये। हम किससे, कहाँ, कब तथा किस प्रकार बोलें अर्थात बोलने के पूर्व व्यक्ति का जागृत तथा सावधान रहना परम आवश्यक है। इस हेतु धैर्य व संयम अपेक्षित है। धैर्य व संयम और जागरण बीच राह में ठिठके मन को भी राह दिखाने में सक्षम होते है।

नव सृजन के इच्छुक लेखकों व साहित्यकारों के लिए शब्द सौष्ठव आवश्यक है। उनमें अभिव्यक्ति की तड़प होती है। वे कल्पनाओं का तानाबाना बुनते हैं। जब वे शब्द गढ़ते हैं तब व्यंजनाओं की चमक उनके साहित्यिक कर्म को शिखर पर पहुंचाने की सामर्थ्य रखती है। शब्द बोध लोकरीति के वाहक बन वाक्यों में उतरते हैं तब पाठक का तन्मय होकर गद्य या पद्य की रस धारा में वह जाना लाजिमी हो जाता है। शब्द जब भाषा में मृदुता, कोमलता और सम्मोहकता लाते हैं तब वाक्य जल पर खिंची लकीरों से उछलते दिखाई देते है और नीरसताक भी रसमय होना स्वभाविक है। ऐसे समय विवेकशील व्यक्ति मन की निर्वाध गति पर विराम लेने में समर्थ होता है।

अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है कि जो व्यक्ति अपने भाव शब्दों के रूप में व्यक्त करना चाहता है वह ज्ञानवान, विवेकशील और मौलिक चिंतक हो। इसके साथ ही सफलता के इच्छुक सृजन धर्मी का दृढ़ इच्छावान होने के साथ श्रमजीवी अर्थात परिश्रमी होना आवश्यक है। न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रवि शांति मुखे मृगा: अर्थात व्यक्ति की इच्छा मात्र से कार्य पूर्ण नहीं होता बल्कि सफलता के लिए परिश्रमी होना जरूरी है।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

मेरे शब्दों में भरा मेरा ही खुमार।
तोड़ते हैं सन्नाटा भरते हैं प्यार।।

नारी के विकास की अवधारणा में अंतर्निहित राष्ट्र का विकास

संजीव ठाकुर

केवल भारत में ही नहीं में पूरे विश्व में स्त्रियां उनके नैसर्गिक सम्मान की हकदार हैं। स्त्रियों का यथोचित सम्मान ही किसी भी समाज और राष्ट्र के विकास की धुरी हैं । पुरानी मान्यताओं को देखते हुए परिवार समाज तथा देश में स्त्रियों को अग्रणी स्थान देना तय किया जाना चाहिए ।

स्त्रियों के प्रति भारतीय पुरुषों की मानसिकता तथा नजरिया बदलने की आमूलचूल आवश्यकता। भारत देश में नारी पूज्यंते हैं, नारी को नौ देवियों का स्वरूप माना जाता है । शास्त्रों में देवी के नौ स्वरूप शैलपुत्री,ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, महागौरी,कालरात्रि, सिद्धिदात्री, देवियों के नौ रूप जो आतताइयों, राक्षसों से नारियों तथा देवताओं की रक्षा करती हैं। भारत के साथ-साथ विश्व में मुख्यत: व्याप्त पुरुष प्रधान समाज ने एक ऐसी सामाजिक संरचना का निर्माण किया है, जिसमें प्रत्येक निर्णय लेने संबंधित अधिकार पुरुषों के पास ही सीमित रहे हैं।

आदिम समाज से लेकर आधुनिक समाज तक विश्व की आधी दुनिया के प्रति भेदभाव पूर्ण दृष्टिकोण रखा गया है। जिसने कभी भी स्त्री को व्यक्ति के रूप में स्वीकार नहीं किया है। भारतीय समाज में भी प्राचीन नीतिकारों ने स्त्रियों को पिता, भाई, पति या पुत्र के संरक्षण में ही सामाजिक जीवन जीने की शास्वत वकालत की है. हमारे धर्म धर्मशास्त्रों में भी 'प्राप्ते तू दशम वर्षे,यस्तु कन्या न यच्छसी ',अर्थात कन्या को 10 वर्ष तक पहुंचते-पहुंचते उसका विवाह कर दिया जाना चाहिए। इस तरह की कुंठित भावनाओं से ग्रसित पुरुष समाज की मानसिकता वाली शिक्षा हर तरफ देखने मिलती है। यह सच है कि पुरुष प्रधान मानसिकता ने स्त्रियों को स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में स्वीकार ही नहीं किया था। बल्कि तथाकथित लोकतांत्रिक एवं आधुनिक मूल्यों वाले पश्चिमी समाज ने महिलाओं को 1920 तक व्यक्ति के रूप में स्वीकार नहीं किया था। पश्चिम के देशों में व्यक्ति मतलब उनका तात्पर्य पुरुष और पुरुष समाज से ही था। इंग्लैंड में व्यक्ति को वोट देने का अधिकार था लेकिन महिलाएं 1918 तक वोट देने के अधिकार से वंचित थी। अमेरिका में 1920 तक महिलाएं वोट देने का अधिकार के बिना ही जीवन यापन कर रही थी। विश्व में पहली बार भारत में व्यक्ति के अंतर्गत महिला को शामिल किया गया था इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने कोरनेलिया सोराबजी नामक महिला के वकालत करने संबंधी आवेदन को एक व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया। इस तरह 1920 में महिला व्यक्ति के रूप में भारत में उच्च न्यायालय द्वारा आदेश देकर स्वीकारोक्ति प्रदान की गई। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 1929 के आसपास ही महिला को व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया गया। भारत में सदैव नारी को अबला का दर्जा दिया जा कर एक अवैतनिक श्रमिक अथवा भोग की वस्तु के रूप में देखा है। जहां समाज की आधी आबादी को व्यक्ति का दर्जा ही प्राप्त नहीं हो, वहां उसके साथ समानता के व्यवहार की अपेक्षा कैसे की जा सकती है। महिला सशक्तिकरण के प्रयास में राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महिला दिवस का आयोजन किया जाता है, जिसकी शुरुआत अमेरिका द्वारा 28 जनवरी 19 मई को की गई थी आगे चलकर रूस की महिलाओं द्वारा 1917 में महिला दिवस पर रोटी कपड़ा एवं बराबरी के लिए अधिकार की मांग रख हड़ताल भी की गई थी।

भारत के परिपेक्ष में देश में नारियों का ऐसा वर्ग भी है जो सजग जागरूक शिक्षित एवं नौकरी पेशा है। उसे अपने अधिकार का तथा सामर्थ का पूर्ण ज्ञान है। भारत की महिला आज पुरुषों के साथ स्वास्थ्य, इंजीनियरिंग,थल, जल, वायु सेना, रेल, बस,प्रशासन तथा अंतरिक्ष में कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे रही है। राजनीति में वैश्विक स्तर पर श्रीलंका की श्री मांओ भंडार नायके, ब्रिटेन की मार्गरेट थैचर, भारत की श्रीमती इंदिरा गांधी, इजराइल की गोल्डा मायर ऐसी महिलाएं थी, जिन्होंने इतिहास बनाया है।

वर्तमान में भारतीय मूल की अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला हैरिस, भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, वित्त मंत्री निर्मला सीता रमन तथा पूर्व मंत्री स्मृति ईरानी, किरण बेदी तथा अंतरिक्ष विज्ञानी स्वर्गीय कल्पना चावला ऐसे उदाहरण है, जो कभी भुलाया नहीं जा सकेंगे। महिलाएं आज हर क्षेत्र में अपना परचम फैला रही है। भारत सरकार में भी सशक्त महिलाएं कैबिनेट मंत्री का दर्जा प्राप्त कर सरकार मैं अपनी सहभागिता प्रदान कर रही है। अंतरिक्ष में भारतीय मूल की कल्पना चावला ने अपना सर्वस्व त्याग कर राष्ट्र का गौरव बढ़ाया है। अमेरिका की उपराष्ट्रपति भारतीय मूल की कमला हैरिस भी भारत तथा महिलाओं का गौरव बढ़ाकर महिला सशक्तिकरण का एक सशक्त उदाहरण बनी है। पर दूसरी तरफ भारत की जनसंख्या की 65 महिलाएं ग्रामीण क्षेत्र में केवल 45% शिक्षित है,और शहरी महिलाएं ग्रामीण महिलाओं से थोड़ी ज्यादा शिक्षित हैं पर पूरे 141 करोड़ की जनसंख्या में महिलाओं का भागीदारी का प्रतिशत अत्यंत न्यून है। अत्यंत कम प्रतिशत महिलाएं ही शिक्षा, समानता, निजता के अधिकार का उपयोग कर पा रही। ऐसे में यदि नारी सशक्तिकरण की अवधारणा को माना जाए तो भारत के परिपेक्ष में नारी उत्पीड़न हर क्षेत्र हर प्रदेश तथा देश की राजधानी दिल्ली, मुंबई, कोलकाता तथा बड़े महानगरों में हो रहा है।नारी के ऊपर होते बलात्कार अत्याचार तथा शोषण की कहानियां रोज अखबारों में दिखाई देती है। भारत में नारी सशक्तिकरण की स्थिति बहुत बेहतर नहीं कहा जा सकती है। सर्वे के अनुसार प्रति मिनट भारत में 800 महिलाएं किसी न किसी तरह से प्रताड़ना का शिकार हो रही है।

- रायपुर

'औरा' राधा-कृष्ण को समर्पित अप्रतिम ग्रंथ

आधुनिकता के चक्कर में इन दिनों भक्ति साहित्य लेखन की दिशा में बहुत कम काम हो रहा है. लगभग शून्य, फिर भी संतोष की बात है कि इक्का-दुक्का उदाहरण सामने आते रहे हैं. कुछ लोग अभी भी इस देश में ऐसे हैं, जो समय-समय पर भक्ति साहित्य को समृद्ध करते रहे हैं. ऐसे लोगों की रचनाओं को आम पाठको के सम्मुख लाने एक महत्वपूर्ण काम किया है डॉक्टर अपर्णा चतुर्वेदी प्रीता ने. उनके संपादन में एक पुस्तक प्रकाशित हुई है 'श्री राधा-कृष्ण भगवान का औरा'.

पुस्तक के शीर्षक से ही जाहिर है कि इसमें भगवान श्री कृष्णा और राधा से जुड़ी रचनाओं का संकलन होगा. प्रीता प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित 696 पृष्ठ के इस महत्वपूर्ण ग्रंथ को भक्ति साहित्य के सृजनात्मक इतिवृत्त में उल्लेखनीय अध्याय के रूप में याद किया जाएगा. ऐसे ग्रंथ की संपादक डॉ. अपर्णा खुद एक कुशल रचनाकार हैं. उन्होंने अपने पिता और ब्रज भाषा के वरेण्य कवि श्री गजेंद्रनाथ चतुर्वेदी शताब्दी वर्ष (2022) के अवसर पर ग्रंथ का प्रकाशन किया. समीक्ष्य ग्रंथ में चौदहवीं सदी से लेकर इक्कीसवीं सदी के बीच लिखी गई कृष्ण राधा से जुड़ी प्रेम-श्रृंगार और भक्ति की रचनाएँ शामिल हैं. समर्पण पृष्ठ पर डॉक्टर अपर्णा ने लिखा है, 'भक्ति काल से लेकर आधुनिक काल के इक्कीसवी सदी तक के प्रेरणामूलक तत्वों को प्रेम, श्रृंगार,भक्ति, सौंदर्य हमारे हृदय में अंतरनिहित शक्तियों के प्रवाह को,तमाम जटिलताओं के बावजूद सहज गति देने में सहायक है. आस्था और विश्वास ही हमारे जीवन में जीने का मूल मंत्र है.'

'अपनी बात' में पंडित गजेंद्र नाथ चतुर्वेदी ने लिखा है कि 'काव्य शास्त्र के विद्वानों का अनुसरण कर सानुकूल शब्द-योजना प्रवीण प्रतिभा संपन्न कवि ही कर सकता है. इन छंदों में मानव जीवन की गंभीरतर समस्याओं के लिए जो संदेश निहित है, वह है श्री कृष्ण भक्ति का.'

अपर्णा जी ने भी लिखा है कि 'हम श्री कृष्ण-राधा के प्रेम माधुर्य में श्रृंगार के भी अद्भुत चित्र देखे हैं. इन चित्रों के भावों में हम लीन हो जाते हैं. यह अलौकिक प्रेम-भाव लौकिक प्रेम भाव से ही (भक्ति-भाव) हमें आकर्षित करता है... आज भी यह आकर्षण, सौंदर्य, प्रेम-

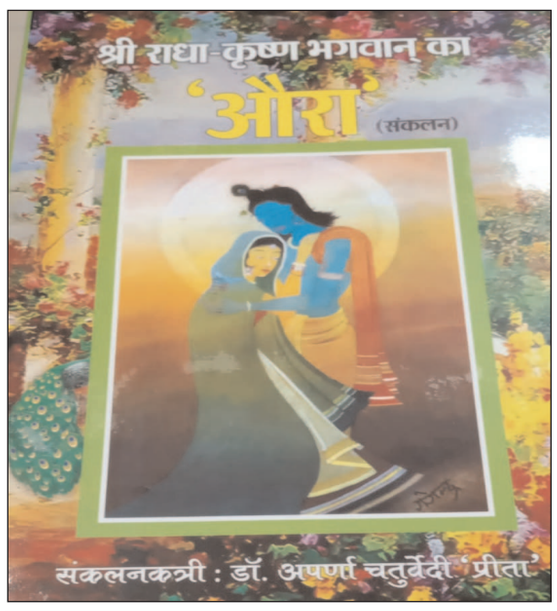

कृति : श्री राधा-कृष्ण भगवान का औरा
संपादक : -डॉ अपर्णा चतुर्वेदी प्रीता
प्रकाशक : प्रीता प्रकाशन, ए -511, सिद्धार्थ नगर, जयपुर 302017

भाव में श्री राधा कृष्ण के रूप, वेशभूषा और स्थान का महत्व प्रमाणिक है. सदियों से यह रूप हमें आकर्षित करता रहा है, करता रहेगा.''

अपनी सुंदर सारगर्भित भूमिका में प्रोफेसर सूर्य प्रसाद दीक्षित ने ब्रज भाषा के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालते हुए कुछ सुंदर उदाहरण भी प्रस्तुत किये हैं. उन्होंने ब्रज भाषा के प्रमुख कवियों के बारे में भी प्रकाश डाला है. सूरदास, मीरा, परमानंद दास,नंद दास,कुंभनदास, नरोत्तम दास, तुलसीदास, रहीम, केशव, सेनापति,बिहारी, रसखान भूषण, मतिराम,देव,घनानंद,पद्माकर, भिखारी दास के अलावा अनेक गुमनाम कवियों का भी नमोल्लेख किया है, जिनके नाम तक लोग ठीक से न जानते हों. ग्रंथ में कुछ विद्वानों के लेख भी प्रकाशित हुए हैं. इस ग्रंथ में कृष्ण भक्ति पर लिखी गई अनेक रचनाएं पढ़ने को मिलेंगी. इनमें कुछ के गद्य लेख हैं, तो कुछ कवियों की कविताएँ और गीत संग्रहित हैं. सभी रचनाकारों के नाम यहां उल्लिखित करना संभव नहीं है, लेकिन कुछ नाम जरूर लिए जा सकते हैं. जैसे रामवृक्ष बेनीपुरी, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, गोपाल प्रसाद व्यास,भानुदत्त त्रिपाठी मधुरेश, हजारीप्रसाद द्विवेदी, विभूति मिश्र, प्रभुदयाल मित्तल,सत्येन्द्र चतुर्वेदी, डॉ कैलाश चंद्र भाटिया, डॉ राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी, भगवतीप्रसाद देवपुरा, डॉ वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, राजकुमार केसवानी, गिरीश पंकज, देवमणि पांडे, सुधाकर अदीब, देवकीनंदन शांत, मोहन सपरा, डॉ सरोजिनी कुलश्रेष्ठ, देवकिशन राजपुरोहित, योगेश वर्मा स्वप्न, डॉ आनंद स्वरूप पाठक आदि. मुस्लिम रचनाकारों की भी रचनाएं इसमें शामिल है जैसे आबिद हुसैन, डॉ नजीर मोहम्मद, जावेद उल्फत, मुनव्वर अली ताज, शहाबुद्दीन शाह कन्नौजी, मोहम्मद एनुलहक नौशाद, जे एम खान आदि.

'औरा' में गजेंद्र नाथ चतुर्वेदी,महावीर भारती, नीलम गुप्ता, रमा कुमावत, अनुष्का चतुर्वेदी गुप्ता के चित्र ग्रंथ की शोभा बढ़ाते हैं. आवरण पृष्ठ पर जी एन चतुर्वेदी जी की वॉश पेंटिंग नयनाभिराम है. 696 पृष्ठों वाले इस ग्रंथ की कीमत ढाई हजार रुपए कुछ अधिक लग सकती है. लेकिन जो पठनीय सामग्री इस ग्रंथ में संकलित हैं, उस हिसाब से अधिक नहीं कही जा सकती. संपादक एवं संकलनकत्री डॉ, अपर्णा जी ने इस ग्रंथ को तैयार करने में जो मेहनत की, उसकी जितनी तारीफ की जाए कम है. क्योंकि अनेक विद्वानों से उन्होंने संपर्क किया, कृष्ण राधा भक्ति से जुड़ी कविताओं एवं लेखों की खोज की, तब इतनी प्रचुर मात्रा में सामग्री जुटाई जा सकी. विश्वास है कि यह अनुपम कृति भक्ति साहित्य लेखन की दिशा में नये रचनाकारों के लिए भी प्रेरणा का कार्य करेगी.

-समीक्षक/डॉ योगिता जोशी

दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष स्वास्थ्य शिविर

निर्दलीय संवाद

जुन्नारदेव। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया सामाजिक न्याय एवं दिव्यांग सशक्तिकरण विभाग द्वारा 18 वर्ष तक के दिव्यांग बच्चों की पहचान स्कैनिंग एवं प्रमाण पत्र बनाने के विशेष शिविर का आयोजन किया गया किया गया। कार्यालय उपसंचालक सामाजिक न्याय एवं दिव्यांग सशक्तिकरण जिला छिंदवाड़ा के दिशा निर्देशन में यह दिव्यांग शिविर आयोजित हुआ।

ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर बीएमओ डॉक्टर सुदेश नागवंशी ने दैनिक निर्दलीय को बताया कि मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी की पहल पर जिला कलेक्टर सामाजिक न्याय एवं निशक्त कल्याण छिंदवाड़ा के निर्देशन में इस शिविर का आयोजन में 77 दिव्यांग जनों द्वारा पंजीयन कराया गया जिनकी जांच उपरांत 44 दिव्यांगजन को प्रमाण पत्र जारी किए गए। इस संपूर्ण कार्रवाई में दिव्यांग जनों एवं सशक्तिकरण विभाग छिंदवाड़ा सहित मेडिकल कॉलेज एवं जिला चिकित्सालय की टीम ने डॉक्टर संकेत विजय और डॉक्टर निर्भय पांडे डॉक्टर अंजली सिंह डॉक्टर गरिमा साहू सलाम कुमार अग्रवाल,डॉक्टर पूजा धुर्वे, डॉक्टर एलएन साहू सहित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से नेत्र सहायक यूके नेम अरविंद पाल मनोवैज्ञानिक विशेष शिक्षक नम्रता सूर्यवंशी, दिव्यांग बोर्ड टीम से देवदास बरखाने आशीष चौहान उपस्थित हुए, जिन्होंने दिव्यांगजन का परीक्षण किया।